अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 9, Issue 2, (April-June 2021)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ज़िंदगी को रफ्तार देता सोशलमीडिया

डॉ॰रश्मि शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर ,हिन्दी विभाग
अदिति महाविद्यालय,दिल्लीविश्वविद्यालय

सार

जनसंचार एक समुदाय तक सीमित न रहकर बहुतायत जन समूह को परस्पर जोड़ने की एक प्रक्रिया है। अपने आरंभिक काल से लेकर अब तक जनसंचार माध्यमों में निरंतर परिवर्तन हो रहे हैं । मुख्य रूप से इन्टरनेट का आगमन संचार क्रान्ति और मुख्य रूप से सोशल मीडिया के स्थापन का प्रमुख कारण रहा है। इस मीडिया के आगमन से मनुष्य का जीवन,जीवन-शैली,सोच,कार्यप्रणाली सभी में परिवर्तन आया । इसके विविध आयाम हैं जिसमें अनेक ज्ञानवर्धक, मनोरंजक,सामाजिक ,राजनीतिक सभी प्रकार की साइट्स उपलब्ध हैं। इनसे न केवल व्यक्तिगत तौर पर अपितु आर्थिक रूप से भी जुड़ने वाले लोगों को लाभ पहुंचता है। यही कारण है कि वर्तमान में सोशल मीडिया का दखल हर किसी के जीवन में इतना व्यापक है किइसके बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती । ऐसा जान पड़ता है कि जो जिंदगीकी गाड़ी पटरी पर थी, वह अचानक से तेज रफ्तार से दौड़ने लग गई है । जीवनके इस बदलाव मेंसोशल नेटवर्किंग साइट्स की अहम भूमिका रही है। जो विश्व भर के लोगों को एक ही मंच पर एकत्रित करने में सक्षम है। यह एक ऐसा जनमाध्यम है जिसने आम जन को भी अपना पक्ष सार्वजनिक रूप से रखने की आजादी प्रदान की है। वस्तुतः सोशल मीडिया का प्रभाव समाज में सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही रूपों में परिलक्षित होता है। बावजूद इसके वर्तमान में यह ऐसे जनमाध्यम के रूप में उभरा है कि यह हमारे जीवन का अटूट हिस्सा बन चुका है, इसके बिना व्यक्ति जीवन की कल्पना ही नहीं कर सकता । इसके माध्यम से मनुष्य ने घर बैठे बैठे ही जीवन यापन के अनेकानेक विकल्प खोज निकाले है। जिन का उपयोग एवं उपभोग वह न केवल आवश्यकता पड़ने पर ही करता है बल्कि अनेकों बार वहएक व्यसन की तरह इसके संजाल में फँसकर एक दूसरे ही लोक में विचरण करने लगता है।

बीज शब्द : सोशल मीडिया ,जनमाध्यम,जनसंचार ,इन्टरनेट ,सूचना क्रांति, सोशल नेटवर्किंग साइट्स,

आलेख :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज से जुड़कर ही उसका सम्पूर्ण विकास होता है। समाज से विलग व्यक्ति की कोई पहचान नहीं होती क्योंकि, उसे पहचान समाज के द्वारा ही मिलती है । अक्सर जब भी कोई किसी से मिलता है तो बातों बातों में वह यह कहता हुआ दिखाई देता है वह बहुत अधिक सोशलहै,या नहीं है। सोशल यानि कि सामाजिक नहीं है, मिलनसार नहीं है। इसका तात्पर्य यही है कि व्यक्ति समाज से जुड़ा होता है, समाज में अन्य लोगों से संपर्क स्थापित करके उनसे संवाद स्थापित करना,एक दूसरे से भावनात्मक रूप

Volume 9, Issue 2, (April-June 2021)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

से जुड़कर सभी के सुख दुख की खोज खबर लेकर उनकी समुचित सहायता करना यही सामाजिकता की पहचान होती है। सोशल मीडिया भी एक ऐसा ही माध्यम है, जहां लोग परस्पर एक कड़ी के रूप में जुड़ते चले जाते हैं । यह कड़ी समय के साथ निरंतर बढ़ती ही जाती है। समाज और समाजिकता के उपरोक्त दृष्टांत से मीडिया के इस प्रचलित हो रहे नवीन रूप 'सोशल मीडिया' की विवक्षा करना आसान हो जाता है । सोशल मीडिया एक ऐसा मंच है जिसने व्यक्ति को अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता दी है, कल्पना की ऊंची उड़ान दी है, नए बदलाव ,नयी व्यवस्था ,नई दुनिया से परिचय करवाया है । आज यह केवल एक संचार माध्यम न होकर घर घर ,जन जन के जीवन का प्रमुख हिस्सा बन चुका है। जब हम संचार शब्द बोलते हैं तो सर्वप्रथम यही अर्थ ज़हन में आता है कि जो संचरण करे वही संचार है, जो परस्पर हम सभी को जोड़े वही संचार है, जो एक खबर को सब तक पहुंचाए वह संचार है।आर्थिक उदारीकरण के दौर में सूचना प्रौद्योगिकी में नई तकनीक का विकास हुआ, जिसके परिणामस्वरूप संचार साधनों में भी अनेक बदलाव देखने को मिले । सूचना तंत्रों का बाजार गरम होने लगा । पहले जो मीडिया कुछ ही लोगों तक या आभिजात्य वर्ग तक ही सीमित था, अब वह घर घर में, हर गली कूँचे, हर तबके में पहुंचा । जहां पहले संचार के सीमित माध्यम थे अब न जाने कितने ही नए साधनों का विकास हुआ । यदि हम प्रागेतिहासिक काल पर एक दृष्टि डालें तो स्पष्ट हो जाता है कि उस समय में सूचना पंहुचाने का काम हरकारे का होता था ।सार्वजनिक सूचना के लिए ढ़ोल और नगाड़ों का प्रयोग करके सभी को एकत्रित किया जाता था और उन सभी जनों को जो भी आवश्यक सूचना या फरमान होता था, सुनाया जाता था । धीरे धीरे डाक व्यवस्था के आरंभ के साथ डाक तार, चिट्ठी, पत्री का सिलसिला अनेक वर्षों तक चलता रहा ।छापाखाना आरंभ होने के साथ ही अनेक पत्र –पत्रिकाओं के प्रकाशन के साथ ही प्रिंट मीडिया ने रफ्तार पकड़ी । इलैक्ट्रोनिक मीडिया के आने से मुद्रित माध्यमों की रफ्तार में मंदी का दौर शुरू हुआ । यद्यपि स्वाधीनता आंदोलनऔर स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात भी हमारा प्रिंट मीडिया एक सजग प्रहरी बनकर देशवासियों को जागरूक बनाने में पूर्ण सक्षम था ।वर्तमान में मीडिया पर बाजारवाद के प्रभाव का असर प्रिंट पर भी स्पष्ट दिखाई देता है। प्रतिस्पर्धा का बाजार इस कदर गर्म है, जिसमें हर कोई अपने को नंबर की दौड़ में शामिल करने में जुटा हुआ है ।भूमंडलीकरण, वैश्वीकरण या उपभोक्तावादी संस्कृति इन सभी के परिणामस्वरूप संचार के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए फलतः जनसंचार के अनेकानेक नए विकल्प भी खुले।

आरंभ में जनसंचार माध्यमों की दुनिया समाचार पत्र-पत्रिकाएँ, रेडियोएवं दूरदर्शन तक की सीमित थी । दूरभाष की सुविधा भी रही । किन्तु इन सभी का सीमित दायरा था । कहीं भी बाजारवाद की छाप नहीं थी। इनमें निहित सभी सूचनाएँ और कार्यक्रमों का अपना एक स्तर था । हर वर्ग के अनुकूल साफ मर्यादित, मनोरंजन से भरपूर कार्यकमों का निर्माण होता था । वस्तुतः उस दौर मेंकार्यक्रमों में वैरायटी कम ही थी, लेकिन जो भी थी, पूर्ण उपयोगी, स्तरीय, मनोरंजक ,रुचिकर, वैविध्यपूर्ण हुआ करती थी । एक ही चैनल पर गीत संगीत, ज्ञानवर्धक, बच्चों के लिए, बड़ों के लिए सभी के लिए कार्यक्रमों का प्रसारण होता था। बच्चों से लेकर बड़ों तक हर कोई समाचार पत्र और पत्रिकाएँ पढ़ता था । इससे उनकी

Volume 9, Issue 2, (April-June 2021)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

पठन- पाठन की क्षमता और कौशल का भी निरंतर विकास होता रहता था, जो आज के संदर्भों में लुप्त प्राय ही है। वर्तमान समय मे नयी तकनीक केमोबाइल स्मार्ट फोन ,लैपटॉप, टैब जैसे उपकरणों एक नयी इन्द्रजालिक दुनिया से हमारा परिचय कराया । आए दिन इनका बाज़ार गरम रहता है । नए से नया लेटेस्ट मॉडल निकालने और उपभोक्ताओं को लुभाने के लिए थोड़े बहुत बदलाव के साथ बाजार में लाने की होड़ लगी हुई है। इनके रहते आपको और हमें किसी वस्तु या सामग्री की जानकारी, सूचना आदि के लिए कहीं बाहर जाने की आवश्यकता नहीं है। सब सुविधाएं घर बैठे, एक ही जगह पर उपलब्ध है। ये नवीनतम उपकरण सामाजिक मीडिया का ही हिस्सा हैं। इनपर आपके मस्तिष्क के साथ साथ आँखें और उँगलियाँ भी निरंतर गतिशील रहती है। प्रतिस्पर्धा के दौर में आज ''टेलीविज़न इंडस्ट्री के ज़्यादातर बड़े चैनल इन दिनों मोबाइल प्लेटफॉर्म में दिलचस्पी ले रहे हैं । भारत में 3जी और 4 जी मोबाइल सेवाओं के आगमन के साथ ही मोबाइल फोन पर टेलीविज़न कार्यक्रम देखना संभव हो गया है।" **(नया मीडिया संसार, डॉ॰कृष्ण कुमार रत्तू, पृ॰21, वाइकिंग बुक्स 2012**)

परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है। इसी के चलते जनसंचार के क्षेत्र में भी क्रांतिकारी परिवर्तन आया और वह था इंटरनेट सुविधा का आरंभ । इसने वैश्विक स्तर पर सभी को प्रभावित किया, निजी क्षेत्र ,व्यावसायिक, सामाजिक ,आर्थिक, राजनीतिक कोई भी इसके प्रभाव और उपयोगिता के मानदंडों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाया । आज एक ही स्थान पर बैठकर देश दुनिया में कहीं भी किसी से भी संपर्क स्थापित करना, जानकारी प्राप्त करना, किसी भी विषय से संबन्धित महत्वपूर्ण से महत्वपूर्ण सामग्री इन्टरनेट के जरिये आसानी से उपलब्ध हो जाती है।सोशल मीडिया क्रांति भी इंटरनेट प्रतिफलित रूप है। सम्पूर्ण विश्व को इस सोशल नेटवर्किंग साइट्स रूपी विशाल ऐंद्रिक मायाजाल ने ऐसा विमोहित कर दिया है कि इस संजाल से मुक्ति की कल्पना भी निरर्थक जान पड़ती है।संचार क्रांति के साथ ही अनेक नए संसाधन विकसित होते चले गए । यू ट्यूब ,फ़ेस बुक, ट्विटर, इन्स्टाग्राम, व्हाट्सएप आदि सोशल मीडिया के ऐसे महत्वपूर्ण अंग हैं जिनके बिना आज के समय में जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती । ये हमारे जीवन का अटूट हिस्सा बन कर नीर क्षीर की तरह घुल गए हैं । "आज हर चीज़ को सोशल मीडिया में उसकी उपस्थिति से नापा जा रहा है ।हर संस्था, व्यक्ति, कंपनी, सरकार, साहित्यकर्मी से समाजकर्मी तक और नेता से अभिनेता तक को सोशल मीडिया में उसके वजन, प्रभाव, और लोकप्रियता की कसौटी पर तौला जा रहा है।" (http://www॰jagran॰com/editorial/apnibaat-social-media-and-hindi-14693905॰html)

परंपरागत जन माध्यमों की दुनिया को धता देता यह नया मीडिया कई गुना तेजी से विस्तृत धरातल पर संवाद कड़ी के रूप में विकसित हुआ है। यह मीडिया में आए बदलाव का ही परिणाम है कि वर्तमान में अनेकानेक नए रूपों में 'आज का मीडिया' जिसे 'न्यू मीडिया' कहकर अभिहित किया जा रहा है, निरंतर विकास की दिशा में प्रवाहयमान है। न्यू मीडिया का ही एक रूप है सोशल नेटवर्किंग । सोशल अर्थात सामाजिक, मीडिया मतलब माध्यम अर्थात एक ऐसा माध्यम जो पूरी दुनियाँ के लोगों के साथ जिनसे भी वह संवाद स्थापित करना चाहता है, एक ही स्थान पर बैठे बैठे संवाद कर सकता है। शिक्षा से लेकर

Volume 9, Issue 2, (April-June 2021)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

मनोरंजन, रहन सहन, खान पान, विचारों का आदान प्रदान, कला, संगीत, सिनेमा, सूचनाओं का आदान प्रदान, कहीं पर भी , किसी से कोई भी बात साझा करने का सशक्त माध्यम बन गया है आज का मीडिया यानि सोशल मीडिया ।इसके द्वारा जिन्हें आप हम जानते हैं, केवल वही संपर्क में नहीं रहते अपितु इसके अतिरिक्त न जाने दुनिया भर में कहाँ कहाँ से लोग आपसे जुड़ते चले जाते हैं। इंटरनेट ने वैश्विक धरातल पर जिस प्रकार से सभी को एक दूसरे के जोड़ा है, वह निःसंदेह किसी सुखद आश्चर्य से कम नहीं । वैसे तो सोशल नेटवर्किंग साइट्स की भरमार है , लेकिन भारत में कुछ ही ऐसी महत्वपूर्ण और उपयोगी साइट्स हैं जिन्हें अधिकांश लोग प्रयोग में लाते हैं। जैसे वाट्सएप ; ट्विटर , फेसबुक, यू ट्यूब, इन्स्टाग्राम, लिंकडेन । यदि हमें अपने किसी परिचित को बधाई देनी है तो हम कहाँ जाएंगे, ज़ाहिर सी बात है कि हम उसे या तो व्हाट्सएप पर या फ़ेस बुक पर बधाई देंगे साथ ही प्रतीकात्मक गुलदस्ता या कोई चित्र के साथ अपनी आडियो और वेदियो के माध्यम से अपने विचारों का आदान प्रदान कर अधिक से अधिक लोगों को जोड़ सकने में सक्षम हैं। सोश्ल मीडिया से जुड़ा हर व्यक्ति आज एक पत्रकार की भूमिका का निर्वाह कर रहा है ।हर मुद्दे पर वह अपनी आवाज बुलंद करब्लाग, फेसबुक, ट्विटर, आदि के माध्यम से कहीं भी किसी तक भी, अधिक से अधिक पहुंचाने की ताकत रखता है । इनके माध्यम से हम अपने संपर्क का दर बढ़ाते हुए अधिक से अधिक लोगों तक सीमित शब्दों में अपने विचारों का आदान प्रदान करने के लिए पूर्ण स्वतंत्र हैं ।

वैश्विक महामारी के दौर में सोशल मीडिया ने अहम भूमिका निभाई है । किसी भी घटना, दुर्घटना के घटित होने, लोगों को जागरूक करने, सावधानी संबंधी निर्देश सभी सोशल मीडिया पर निरंतर चलता रहा है। आज जब सब कुछ घर से ही संचालित हो रहा है, ऐसे समय में रोजगार के लिए चिंतित युवाओं की दुविधा का समाधान भी इसके पास मौजूद है । आज का युवा भिन्न भिन्न स्तर पर रोजगार संबंधी आवश्यक कार्यवाही घर से कर पाने में पूर्ण समर्थ है। नए रोजगार के साधन उपलब्ध कराने के लिए 'लिंक्डइन' सोशल साइट है, जिसके माध्यम से युवा अधिक से अधिक से अधिक रोजगार संबंधी जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। इसे व्यक्तिगत न होकर व्यावसायिक दृष्टि से प्रोफेशनल्स के अनुपरूप निर्मित किया गया है, जिसका भरपूर लाभ अनेकों युवाओं को मिल रहा है। इसी प्रकार से आज स्कूली शिक्षा, उच्च शिक्षा का आधार भी पूर्णतः यह वर्चुअल माध्यम ही है। जिसमें बच्चों का ध्यान पढ़ाई से अधिक ध्यान मोबाइल में डाऊनलोड की गई एप्स पर अधिक रहता है। किन्तु महामारी के दौर को देखते हुए इससे सुरक्षित और उपयोगी विकल्प भी अन्य कोई नहीं है। दूसरे शब्दों में सोशल मीडिया वर्चुअल दुनिया का ऐसा मायाजाल है, जिसने किसी न किसी रूप में मानव सभ्यता को अपने वश इस हद तक किया हुआ , कि इसकी रौ में बहकर मनुष्य इससे बाहर की दुनिया से अंजान और उदासीन बन गया है।

"आज के दौर को सोशल मीडिया का दौर भी कहा जाता है। सोशल मीडिया में स्वयं की सक्रिय भागीदारी होती है, इसे 'जनता की आवाज' यानि जनता का अपना मीडिया' भी कहा जा रहा है। मीडिया के इस माध्यम पर प्रयोक्ता किसी अन्य मीडिया पर निर्भर न रहकर

Volume 9, Issue 2, (April-June 2021)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

अपना स्वयं का मीडिया निर्मित कर लेते हैं। वे सोशलमीडिया पर स्वयं ही अपनी बात को दूसरों तक पंहुचाने के स्वरूप में तैयार करते हैं, जरूरी होने पर स्वयं ही सम्पादन करते हैं ,और स्वयं ही इसे प्रकाशित भी कर देते हैं। इस माध्यम पर संदेशों को इच्छित व्यक्तियों तक पहुंचाने के लिए भी दूसरों को 'टैग' करने अथवा संदेश भेजने के जो भी अतिरिक्त प्रयास करने होते हैं,वह भी प्रयोक्ता स्वयं ही करते हैं। साथ ही उन्हें अपने संदेशों पर तत्काल ही प्रतिक्रिया भी मिल जाती है इस प्रकार सोशल मीडिया पर प्रयोक्ता अधिक सहज,आत्मनिर्भर एवं अपनापन महसूस करते हैं। इस माध्यम पर खुलकर वह अपनी बात रख सकते हैं।"**(final-future-of-web-journalism-in-light-of-developing-so..भारत में नए मीडिया का प्रभाव और भविष्य,लघु शोध प्रबंध,नवीन चंद जोशी,शोधार्थी 2015-16)**

निष्कर्ष

सोशल मीडियाने हमारे जीवन जीने की परिभाषा ही बदल दी हे। इसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही पहलू हैं।वर्ष 2020 -21 वैश्विक महामारी का समय में जब सभी जगह लोग भयभीत होकर अपने घरों से निकल नहीं पा रहे। ज़िंदगी जैसे थम सी गई हो । ऐसे समय में ये सोशल मीडिया ही है, जो लोगों संबल बना हुआ है; 'मुसीबत में गाढ़े का साथी'। रुकी– ठहरी सी ज़िंदगी को रफ्तार देता,बुझे चेहरों पर हंसी और मुस्कान बिखेरता सोशल मीडिया ।इसका सशक्त स्रोत मोबाइल स्मार्ट फोन पर फेस बुक , यूट्यूब,व्हाट्स एप,ब्लॉग ,इंस्टाग्राम, जिसका उपयोग हर कोई करता है । आज के संदर्भ में यदि हम देखें तो इसके बिना किसी का भी गुजारा है नहीं । अपनों की खैरियत, प्रत्येक अवसर को आपस में एक दूसरे से साझा करना ,कोई चुटकुला,संक्षिप्त कहानी ,पारिवारिक या अन्य चित्रों को ग्रुप पर शेयर करना,मॉर्निंग संदेश ,आवश्यक सूचना,सुखद एवं दुखद किसी भी घटना की सामूहिक जानकारी देना और कितनी प्रकार की सामग्री है जिसे व्हाट्स एप के माध्यम से हम किसी भी क्षेत्र ,राष्ट्र ,समूह आदि में घर बैठे ही,कुछ ही समय सभी से साझा कर सकते हैं । सोशल मीडिया एक ऐसा अत्यंत महत्वपूर्ण और उपयोगी माध्यम है जिसका यदि सही से आवश्यकतानुसार प्रयोग किया जाए तो इससे समाज ,राष्ट्र तथा इससे जुड़े सभी लोगों का हिट संभव है। किन्तु खेद इस बात का है कि आज यह भी एक व्यसन की भांति बनाता जा रहा है। एक बार जब इन एप्स के उपयोग की आदत पड़ जाती है, तो समय का ध्यान ही नहीं रहता और उपयोगकरने वाला सब कुछ बिसरा कर इन्हीं में लगा रहता है । कुछ इनमें से ऐसी भी हैं जिनका नियमित प्रयोग अर्थोपार्जन के अवसर भी प्रदान करता है। स्पष्टतः यदि किसी भी माध्यम को तरीके से ,जरूरत के अनुसार उपयोग में लाया जाता है ,तो उससे लाभ ही होता है । किन्तु यदि उसका उपयोग जरूरत से ज्यादा ,बेवजह,गलत तरीके से किया जाए तो इसका परिणाम अत्यंत कष्टप्रद होता है। 'अति हर

Volume 9, Issue 2, (April-June 2021)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

चीज की बुरी होती है" यह उक्ति सोशल मीडिया के संबंध में पूर्ण रूप सटीक है।क्योंकि इसके निरंतर, लगातार प्रयोग से युवाओं और बच्चों पर मानसिक दवाब बना रहता है, स्वास्थ्य पर भी विपरीत असर देखने को मिल रहा है । सब जानते हुए भी कोई भी इसे छोड़ नहीं पाता है। अतः इस सम्पूर्ण विवेचन से इस तथ्य कि पुष्टि हो जाती है कि हमें इस सोशल मीडिया का सदुपयोग करते हुए इसके हानिकारक दुष्परिणामों से बचने का प्रयास करना चाहिए ;किन्तु दुविधा यह है कि सब जानते हुए भी आज का प्रयोक्ता एकदम खामोश, उदासीन, अंजान बना हुआ है ।